# केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
## जनकपुरी, नई दिल्ली
## स्नातकोत्तर डिप्लोमा – पाठ्यक्रम
## पाण्डुलिपिविज्ञान एवं पुरालिपिशास्त्र

### प्रस्तावना

पाण्डुलिपिविज्ञान के अन्तर्गत प्राचीन हस्तलिखित प्रलेखों का वैज्ञानिक एवं संरचनात्मक अध्ययन किया जाता है। व्यापक अर्थ में किसी भी प्रकार के आधार पर लिखित पाठ्य सामग्री या दस्तावेज जिन में अभिलेख, वृक्ष के पत्रों पर लिखित लेख, धातु पत्रों पर उत्कीर्ण लेख, हस्तलिखितग्रन्थ, तथा विविध प्रकार की पुरातात्विक वस्तुओं पर प्राप्त लेख आदि है, यह सभी पाण्डुलिपि विज्ञान के क्षेत्र में समाहित हैं। किसी भी देश या संस्कृति की गौरव पूर्ण विरासत इन्हीं प्राचीन लेखों के द्वारा उजागर और भावी पीढ़ी तक संक्रान्त होती है। प्राचीन पाण्डुलिपि ग्रन्थ हमारी बौद्धिक सम्पदा के संवाहक हैं। पाण्डुलिपि विज्ञान में प्राचीन पाण्डुलिपियों का अन्वेषण, संग्रहण, सूचीकरण, परिरक्षण– संरक्षण, सम्पादन, पाठभेद, समीक्षात्मक-ग्रन्थसम्पादन तथा प्रकाशन आदि विषयों का अध्ययन समाहित है। आज पाण्डुलिपिविज्ञान को विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाता है।

पाण्डुलिपिविज्ञान यद्यपि एक स्वतन्त्र विद्याशाखा है परन्तु इसका अनेक विषयों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। अन्य अनेक विषयों के साथ ही पाण्डुलिपिग्रन्थों और पुरालेखों को पढ़ने के लिए पुरालिपिशास्त्र के ज्ञान की आवश्यकता होती है, अतः यह पाण्डुलिपिविज्ञान का अनिवार्य अंग है। प्राचीन लिपियों में लिखित इन पुरालेखों का अध्ययन, शोध तथा प्रकाशन पुरालिपिशास्त्र के ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। पाण्डुलिपिविज्ञान के अध्ययन से अध्येता के बौद्धिक स्तर में वृद्धि होती है। इसके साथ ही पाण्डुलिपियों में निहित प्राचीन ज्ञान परम्परा के संरक्षण, उस पर शोध तथा उनकी प्रांसगिकता की समझ भी उत्पन्न होती है।यह शोध प्रविधि से सम्बद्ध उत्तम कौशल को विकसित करने में भी सहायक है।

### [1] दृष्टि एवं लक्ष्य- (Vision & Mission)

1. इस पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की है, जिससे अध्येता में हस्तलेखों की पहचान करने, संरक्षण करने तथा सूची पत्रों के निर्माण की विधियों को सीखने की क्षमता उत्पन्न हो सकेगी।
2. यह पाठ्यक्रम अध्येता में पाण्डुलिपि ग्रन्थों के प्राथमिक प्रकाशन एवं पाठ समीक्षात्मक सम्पादन युक्त प्रकाशन की प्रविधियों के कौशल को विकसित करने में सहायक होगा।
3. इस पाठ्यक्रम की संरचना के अनुसार अध्येता को पाण्डुलिपिविज्ञान के सभी पक्षों के साथ, पुरालिपियों का, ग्रन्थ सम्पादन एवं प्रकाशन प्रक्रियाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त होगा।
4. यह पाठ्यक्रम अध्येताओं में भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बद्ध प्रत्येक क्षेत्र में अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के खोज, सम्पादन, शोध एवं प्रकाशन की दिशा में रुचि उत्पन्न करने में सहायक होगा।

## [2] पाठ्यक्रम उद्देश्य- (Aims and Objective)

1. भारत की प्राचीन ज्ञान परम्परा की स्त्रोत सामग्रियों जैसे– अभिलेख, पाण्डुलिपियाँ, धातु पत्र लेख, पटलेख, मुद्रालेख आदि का संग्रह, संरक्षण और शोध करना तथा अप्रकाशित पाण्डुलिपि ग्रन्थों का प्रकाशन करना।
2. अध्येताओं को पाण्डुलिपिविज्ञान एवं पुरालिपियों का प्रशिक्षण प्रदान करना।
3. पाण्डुलिपियों के सम्पादन का सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक ज्ञान प्रदान करना।
4. पाण्डुलिपिग्रन्थों के परिरक्षण – संरक्षण की प्रविधियों का ज्ञान प्रदान करना।
5. समीक्षात्मक ग्रन्थ सम्पादन की प्रविधियों का उदाहरणों के साथ ज्ञान प्रदान करना।

## [3] पाठ्यक्रम फलितांश - (COURSE OUTCOMES)

1. यह पाठ्यक्रम ऐसा मानव संसाधन निर्मित करने में सहायक होगा, जो भारत की बौद्धिक ज्ञान संपदा को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित एवं प्रकाशित करने की दिशा में प्रयत्नशील तथा सामर्थ्य युक्त होगा।
2. इस पाठ्यक्रम द्वारा प्रगत वैज्ञानिक प्रविधि के ज्ञान से युक्त प्रशिक्षित विद्वान उपलब्ध होंगे, जो भारतीय ज्ञान के स्त्रोतभूत अप्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थों के अन्वेषण और शोध की दिशा में कार्य करते हुए, इस क्षेत्र में अभाव को पूर्ण करेंगे।
3. इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने वाले अध्येता पाण्डुलिपिविज्ञान के विविध क्षेत्रों के साथ ही पाण्डुलिपि संग्रहण एवं संरक्षण विधियों के ज्ञान से युक्त होंगे।
4. इस पाठ्यक्रम के अध्येता को भारत की अनेक प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण लिपियों का तथा उनके विकास क्रम के इतिहास का ज्ञान होगा।
5. इस पाठ्यक्रम के अध्येता पाण्डुलिपि ग्रंथ सम्पादन तथा समीक्षात्मक ग्रंथ सम्पादन करने में सक्षम होंगे।

## [4] रोजगार के अवसर – (CAREER OPPORTUNITIES)

1. इस पाठ्य क्रम में प्रशिक्षण के उपरान्त अध्येता को पाण्डुलिपि ग्रन्थों को पढ़ने, उनका व्याख्यान करने के साथ ही उनके सम्पादन एवं प्रकाशन की विशेषज्ञता प्राप्त होगी। इसके द्वारा अध्येता को सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में हस्तलेख संग्रहालयों में हस्तलेख विशेषज्ञ एवं शोधकर्ता के रूप में कार्य करने का अवसर मिलेगा।
2. अध्येता को इंडोलोजिकल स्टडी सेंटर्स तथा शोध केन्द्रों में कार्य के साथ ही विभिन्न पब्लिशिंग हाउस जो प्राचीन ज्ञान के प्रकाशन कार्य करते हैं, उनके साथ कार्य करने का अवसर उपलब्ध होगा।
3. अध्येता लिपि प्रशिक्षक के रूप में भी शिक्षण संस्थाओं तथा NGO's के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

## [5] पाठ्यक्रम विवरण - (COURSE DETAILS)

| | | |
|---|---|---|
| पाठ्यक्रम नाम | - | स्नाकोत्तर डिप्लोमा – पाण्डुलिपिविज्ञान एवं पुरालिपिशास्त्र |
| अवधि | - | एक वर्ष |
| पाठ्यक्रम स्वरूप | - | वार्षिक (Annual) |
| पाठ्यक्रम अर्हता | - | |
| अनिवार्य योग्यता | - | किसी भी विषय से स्नातक की उपाधि प्राप्त व्यक्ति इस पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त कर सकता है। |
| वांछनीय योग्यता | - | संस्कृत भाषा का ज्ञान |
| शिक्षण विधि | - | ऑफलाइन तथा ऑनलाइन |
| परीक्षा विधि | - | ऑफलाइन |
| शिक्षण माध्यम | - | संस्कृत, हिन्दी, अँग्रेजी |

## [6] शिक्षणप्रविधि-

इस पाठ्यक्रम के शिक्षण के लिए छात्र केन्द्रित शिक्षण अधिगम एवं अनुभवात्मक अधिगम प्रविधि का उपयोग किया जाएगा। यह डिप्लोमा पाठ्यक्रम वार्षिक होगा। प्रारम्भिक मास में पाण्डुलिपि विज्ञान का सामान्य परिचय होगा तत्पश्चात् सभी विषयों का विशिष्ट अध्ययन होगा। सम्पूर्ण शिक्षण अवधि में व्याख्यानों के साथ प्रायोगिक सत्र भी होंगे। इसमें हस्तलेखों को पढ़ने का अभ्यास, लिपियों का अभ्यास, सूचीपत्र (कैटेलाग) निर्माण का प्रशिक्षण, सेमिनार, प्रोजेक्टकार्य, प्रदत्तकार्य तथा अन्य प्रायोगिक कार्य भी कराए जाएंगे। कक्षा की शिक्षण गतिविधियों में छात्र सहभागिता को प्रोत्साहित किया जाएगा।

## [7] मूल्यांकन प्रक्रिया – (EXAMINATION AND EVALUATION)

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम अवधि में पाँच प्रश्नपत्र होंगे। दो पत्र प्रायोगात्मक/प्रदत्तकार्य/परियोजना कार्य के रूप में होंगे। प्रत्येक पत्र 100 अंक का होगा। जिसमें 60 अंक के लिखित परीक्षा होगी। प्रत्येक पत्र में उससे सम्बद्ध सभी विषयों में प्रश्न सम्मिलित होंगे। प्रत्येक पत्र में बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघुउत्तरीय प्रश्न, लघुउत्तरीय प्रश्न तथा विस्तृत प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रायोगिक पत्रों में लिप्यंतर, अभिलेख वाचन, परियोजना कार्य पर प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित होगा। प्रत्येक पत्र 3 घण्टे की अवधि का होगा।

| पत्र संख्या | विषय | क्रेडिट |
|---|---|---|
| 01 | पाण्डुलिपि विज्ञान का परिचय | 06 |
| 02 | पुरालिपि विज्ञान-परिचय,प्रमुख पाण्डुलिपियाँ एवं हस्तलेख सम्पादनकर्ता | 06 |
| 03 | पुरालिपियाँ एवं अभिलेख-अभ्यास | 06 |
| 04 | पाठालोचन-परिचय एवं पाठसम्पादन के अंग | 06 |
| 05 | समीक्षात्मक संस्करण विधि एवं पुरालिपि अभ्यास | 06 |
| Skill course-1 | Minor project | 04 |
| Skill course-2 | Major project | 06 |
| **Total credit** | | **40** |

# स्नातकोत्तरडिप्लोमा- पाण्डुलिपिविज्ञान एवं पुरालिपिशास्त्र
## वार्षिक पाठ्यक्रम

**विषयकोड – PGDMP** **Total Credit = 40**

| पत्र कोड एवं विषय | पाठ्यवस्तु विवरण | क्रेडिट |
|---|---|---|
| PGDMP-1 | **पाण्डुलिपि विज्ञान का परिचय**<br>UNIT-1<br>• पाण्डुलिपि विज्ञान-परिचय<br>• पाण्डुलिपि विज्ञान के अध्ययन का महत्त्व एवं उसके सहायक शास्त्र।<br>UNIT-2<br>• पाण्डुलिपियों के विविध प्रकार एवं उनकी विशेषताएं (ताड-पत्र, भुर्ज-पत्र, साँची-पत्र, तूलीपत्र, ताम्र-पत्र,स्वर्णपत्र, रजतपत्र, पटलेख, मृतिकालेख, स्तम्भलेख, गुहालेख,शिलालेख,चर्मपत्र लेख इत्यादि)<br>UNIT-3<br>• हस्तलेख संग्रह एवं सूची करण का इतिहास, हस्तलेख संग्रह की विधियाँ।<br>• हस्तलेख संग्रह में संस्थाओं और विद्वानों का अवदान।<br>UNIT-4<br>• पाण्डुलिपि ग्रन्थों की रचना प्रक्रिया, पाण्डुलिपिलेखन की विशिष्टपद्धति, लेखक (लिपिकार) की विशेषताएं , लेखन सामग्री<br>UNIT-5<br>• भारत एवं विदेश में स्थित प्रमुख हस्तलेख संग्रहालय एवं डिजिटल पाण्डुलिपि संग्रहालय<br>• कैटेलाग्स के प्रकार एवं उनके निर्माण की प्रविधियाँ।<br>• राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन एवं उसके कार्य<br>UNIT-6<br>• पाण्डुलिपियों में काल-लेखन की विधियाँ। विविध सन्-संवत्<br>• कैटेलागस् कैटेलागरम्, न्यूकैटेलागस् कैटेलागरम्, पाण्डुलिपि से संबद्ध पत्रिकाएं। | CREDIT-6 |
| PGDMP-2 | **पुरालिपि विज्ञान-परिचय, प्रमुख पाण्डुलिपियाँ एवं हस्तलेख सम्पादनकर्ता**<br>UNIT-1<br>• प्रसिद्ध पाण्डुलिपिवेत्ता एवं उनके कार्य तथा समीक्षा ग्रन्थ सम्पादकों का परिचय। | CREDIT-6 |

| | | |
|---|---|---|
| | UNIT-2<br>• महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का परिचय हस्तप्रतियाँ-बखशाली-पाण्डुलिपि, बोवर-पाण्डुलिपि, तुरफान-हस्तलेख, गाडफ्रे-हस्तलेख, भूर्जहस्तप्रति, होरयूजी-हस्तलेख,गिलगित-हस्तप्रति आदिपर्व हस्तप्रति तथा अन्य पाण्डुलिपियाँ।<br>UNIT-3<br>• वाल्मीकि रामायण का समीक्षात्मक संस्करण<br>• महाभारत का समीक्षात्मक संस्करण<br>• पंचतन्त्र का समीक्षित पाठ<br>• अभिज्ञान शाकुन्तलम् का समीक्षात्मक संस्करण<br>UNIT-4<br>• पाण्डुलिपियों के विनाश के कारण।<br>• पाण्डुलिपियों के परिरक्षण एवं संरक्षण की विधियाँ।<br>UNIT-5<br>• लेखन कला का इतिहास।<br>• भारतीय लिपियों का उद्गम और विकास तथा उनका महत्त्व<br>UNIT-6<br>• ब्राह्मी लिपि का परिचय – क्रमिक विकास एवं विस्तार,<br>• खरोष्ठी लिपि परिचय।<br>• शारदा लिपि एवं ग्रन्थ लिपि परिचय, महत्त्व, विस्तार क्षेत्र एवं विकास क्रम। | |
| PGDMP-3 | **पुरालिपियाँ एवं अभिलेख-अभ्यास**<br>UNIT-1<br>• ब्राह्मी (अनिवार्य) एवं खरोष्ठी लिपि(विकल्प) का अभ्यास।<br>UNIT-2<br>• शारदा (अनिवार्य) एवं ग्रन्थ लिपि (अनिवार्य) का अभ्यास।<br>UNIT-3<br>• नन्दीनागरी (अनिवार्य) तथा नेवारी लिपि(विकल्प) का परिचय एवं अभ्यास।<br>UNIT-4<br>• लिप्यन्तरण अभ्यास,पाण्डुलिपि वाचन अभ्यास<br>UNIT-5<br>• अभिलेख-वाचन का अभ्यास (गिरिनारशिलालेख,प्रयाग-प्रशस्ति, भट्टिप्रोलू अभिलेख तथा अन्यलेख) | CREDIT-6 |
| PGDMP-4 | **पाठालोचन-परिचय एवं पाठसम्पादन के अंग**<br>UNIT-1<br>• पाठालोचन – परिभाषा, उद्देश्य, आवश्यकता एवं सम्भावना। पाण्डुलिपि सम्पादन एवं पाठालोचन में सम्बन्ध। | CREDIT-6 |

| | | |
|---|---|---|
| | UNIT-2<br>• समीक्षात्मक पाठ सम्पादन का शोध शाखा के रूप में विकास का इतिहास।<br>UNIT-3<br>•पाठ सम्पादन के मूलभूत अंग एवं पाठालोचन के सिद्धान्त<br>UNIT-4<br>• पाठ के विविध प्रकार<br>• पाठदोष – कारण एवं निराकरण<br>UNIT-5<br>• समीक्षात्मक पाठ सम्पादन का महत्त्व एवं प्रक्रिया।<br>• संचरित पाठ ( Transmitted text)<br>UNIT-6<br>• ग्रन्थ सम्पादन में प्रयुक्त पारिभाषिक पदों का विवरण- apparatus criticus, archetype, autograph, codex, collation, colophon, constituted text, critical recension, Heuristics, hyparchetype, Recension, Urtext, stemma codicum etc.<br>• पाठ - संस्कार (Heuristics / Recensio)<br>• पाठ -संशोधन (Emendation) | |
| PGDMP-5 | **समीक्षात्मक संस्करण विधि एवं पुरालिपि अभ्यास**<br>UNIT-1<br>• समीक्षात्मक पाठ सम्पादन की प्रविधियाँ<br>• निम्नतर पाठ समीक्षा (Lower criticism)<br>• उच्चतर पाठ समीक्षा (Higher criticism)<br>UNIT-2<br>• समीक्षात्मक पाठ सम्पादन में समस्याएं, एकल मातृका सम्पादन<br>• हस्तलेख वंश वृक्ष निर्माण (Genealogy of manuscript)<br>• पाठालोचन सिद्धान्तों के आधार पर सम्पादित प्रमुख संस्कृत ग्रन्थों का परिचय<br>UNIT-3<br>• मोडी, तिगलारी, तेलगु लिपियों का अभ्यास। (किन्हीं दो का)<br>UNIT-4<br>• मलयालम, कन्नड, तमिल लिपियों का अभ्यास (किन्हीं दो का)<br>UNIT-5<br>• उडिया, बंगला तथा गुजराती लिपियों का अभ्यास(किन्हीं दो का)<br>UNIT-6<br>• मैथिली, प्राचीन नागरी, टाकरी लिपियों का अभ्यास (किन्हीं दो का)। | CREDIT-6 |

| | | |
|---|---|---|
| **Skill Course - 1**<br>**Minor Project** | किसी एक लिपि के लघु हस्तलेख का लिप्यन्तरण/हस्तलेखवाचन/ अभिलेखवाचन/डिजिटल कैटेलाग निर्माण का प्रशिक्षण | Credit-4 |
| **Skill Course - 2**<br>**Major Project** | लघु पाण्डुलिपि के सम्पादन का अभ्यास/परियोजना कार्य | Credit-6 |

**कुल प्रश्नपत्र** - 05 (सैद्धान्तिक पत्र )+02 (प्रायोगात्मक परियोजना कार्य) (5×6= 30 4+6=10 क्रेडिट)

प्रत्येक सैद्धान्तिक पत्र में 60 अङ्क लिखित परीक्षा के लिए एवं 40 अङ्क आन्तरिक मूल्याङ्कन के लिए निर्धारित होंगे।

**कुल क्रेडिट** - 40

सन्दर्भ ग्रन्थ :


- A Bibliography of palaeography and Manuscriptology. SwetaPrajapati, Bhartiya Kala Prakashan
- Aspects of Manuscript Studies; veda, classical Sanskrit Literature, Dharmasastra, puranas and Manuscriptology, M.L. Wadekar. Bharatiya Kala prakashan, Delhi, India
- Bhartiyalipiyo Ki Kahani,mule.Gudaker, RajkamalPrakashan,New Delhi,2004
- Indian Epigraphy, .Sivaganesamurti
- Indian Paleogeaphy,Buhler.George,
- Indian Paleography, .Dani.P.H
- Indian Paleography. Pandey.R.B.
- IndoanPaleography,Dani.ahmadHasan
- Introduction to Indian Textual Criticism, .Katre, S.M.
- Introduction toManuscriptology Murthy. R.S shivaganesha Ar. Essivaganesamortu,
- Manuscript andManuscriptology in India. Nandi.S.G&Palit.P.K,
- Manuscriptology ,Nayer. Key Mahesvaran
- Manuscriptology an entrance,Jagannatha.S. ParimalPablication PVT. LTD.
- Manuscripts, Catalogues, Editions, .Raghavan,V
- New lights on Manuscriptology ; a collection of articles of prof. K.V. Sharma, SreeSarada Education Society Research Centre
- PandulipiVijnan (Hindi), .Satyendra
- PracinaBharatiyaLipimala, .Ojha.G.H. –
- Prolegomena Of Mahabharat,Critical Edition(Adiparva Vol.1) : Sukthankar, V.S. BORI,Poona,1936
- Ramayana,Critical Edition s(Balakanda) Baroda.
- ShardalipiDipika.Tikkoo.shrinath.New Delhi,1983.
- ShodhpravidhiiavemPandulipivijhyan ,Mishra,Abhiraj .Rajendra, Akshayavatprakaashn,Allahabad
- The Fundamentals of Manuscriptology. Visalakshy.P.
- The Wealth of Sanskrit manuscripts in India and abroad. Pandurangi, K.T.


30/05/2024

DEPT. OF MANUSCRIPTOLOGY & PALEOGRAPHY

CSU, G.N. JHA CAMPUS, PRAYAGRAJ